

बकरियों में पशु प्रजनन एवं प्रबंधन

डॉ. संजय कुमार मिश्र¹, डॉ. राकेश कुमार², डॉ. अनुज कुमार³ एवं डॉ. मुकुल आनंद⁴

1. उपनिदेशक, पशुधन विकास, पशुपालन निदेशालय, उ०प्र०, लखनऊ
2. उप मुख्य पशुचिकित्साधिकारी, लहरपुर, सीतापुर
3. आचार्य, मादा पशुरोग विज्ञान विभाग, दुग्ध विज्ञान, मथुरा
4. सह-आचार्य, फिजियोलॉजी विभाग, दुग्ध विज्ञान, मथुरा

भारत में बकरियों का प्रजनन एवं प्रबंधन एक अत्यंत महत्वपूर्ण विषय है, क्योंकि बकरियां ग्रामीण अर्थव्यवस्था की रीढ़ मानी जाती हैं। इनसे दूध, मांस, खाल तथा खाद जैसे अनेक उत्पाद प्राप्त होते हैं। बकरी पालन को "गरीब आदमी की गाय" भी कहा जाता है।

1. भारत में बकरी पालन का महत्व

- भारत में बकरियों की संख्या लगभग 148.88 मिलियन है (2019 की पशुगणना)
- उत्पाद: दूध, मांस, खाल, ऊन (कुछ नस्लों से)
- विशेषता: कम लागत, कठिन परिस्थितियों में भी अनुकूलन क्षमता
- प्रमुख नस्लें: जमुनापारी, बरबरी, बीटल, सिरोही, ब्लैक बंगाल, मारवाड़ी, जाखराना आदि

2. बकरियों का प्रजनन प्रबंधन

(क) यौन अवस्था

- मादा बकरी (डो) 6-8 माह में यौन परिपक्व होती है
- पहली बार प्रजनन 12-15 माह की आयु में कराना उचित है
- नर बकरा (बक) 9-12 माह में प्रजनन योग्य हो जाता है

(ख) प्रजनन चक्र

- हीट चक्र: 18-21 दिन
- हीट अवधि: 24-36 घंटे
- सही समय: हीट शुरू होने के 12-18 घंटे बाद

(ग) गर्भधारण अवधि

- औसत 150 दिन (5 माह)

- सामान्यतः 1-2 बच्चे
- कुछ नस्लों (बरबरी, ब्लैक बंगाल) में 2-3 बच्चे

(घ) कृत्रिम गर्भाधान

- भारत में सीमित स्तर पर, लेकिन तेजी से बढ़ रहा है
- नस्ल सुधार एवं रोग नियंत्रण के लिए उपयोगी

3. प्रजनन प्रबंधन के उपाय

- स्वस्थ एवं शुद्ध नस्ल के नर का उपयोग
- 20-25 मादाओं पर 1 नर का अनुपात
- हीट पहचान के लक्षण: पूंछ हिलाना, बेचैनी, आवाज करना, सूजन
- गर्भावस्था में पर्याप्त पोषण और आराम
- गर्भ जांच 45 दिन बाद (अल्ट्रासाउंड)

4. बकरी प्रबंधन

(क) आवास प्रबंधन

- सूखा, साफ, हवादार स्थान
- ऊँचा शेड और जालीदार फर्श बेहतर
- भीड़भाड़ से बचाव

(ख) आहार प्रबंधन

- हरा चारा: बरसीम, नेपियर, ज्वार, बाजरा
- अनाज: मक्का, जौ, सरसों/सोयाबीन खली
- मिनरल मिक्सचर और नमक अनिवार्य
- गर्भित और दुग्ध देने वाली बकरियों को अतिरिक्त पोषण
- बच्चों को जन्म के तुरंत बाद कोलोस्ट्रम अवश्य पिलाएं

(ग) स्वास्थ्य प्रबंधन

- नियमित टीकाकरण (PPR, FMD, Goat Pox आदि)
- 3-4 माह में कृमिनाशक दवा
- साफ-सफाई और बीमार पशु को अलग रखें

(घ) विशेष प्रबंधन

- दूध नस्ल (जमुनापारी, बीटल) का अलग प्रबंधन
- मांस नस्ल (ब्लैक बंगाल, सिरोही) का अलग प्रबंधन
- रिकॉर्ड रखना आवश्यक

5. चुनौतियां एवं समाधान

चुनौतियां

- सीमित संसाधन
- रोग प्रबंधन की कमी
- नस्ल सुधार धीमा

समाधान

- कृत्रिम गर्भाधान का विस्तार
- टीकाकरण व स्वास्थ्य सेवाएं
- संगठित बकरी पालन फार्म
- बाजार विस्तार

निष्कर्ष

भारत में बकरियों का प्रजनन एवं प्रबंधन ग्रामीण आजीविका को मजबूत बनाने का सरल और लाभकारी साधन है। वैज्ञानिक प्रबंधन, उचित पोषण और स्वास्थ्य देखभाल से बकरी पालन अत्यंत लाभदायक बन सकता है।